अध्याय 4

ज्ञान योग

दिव्य ज्ञान

ISKCON
MANGALURU

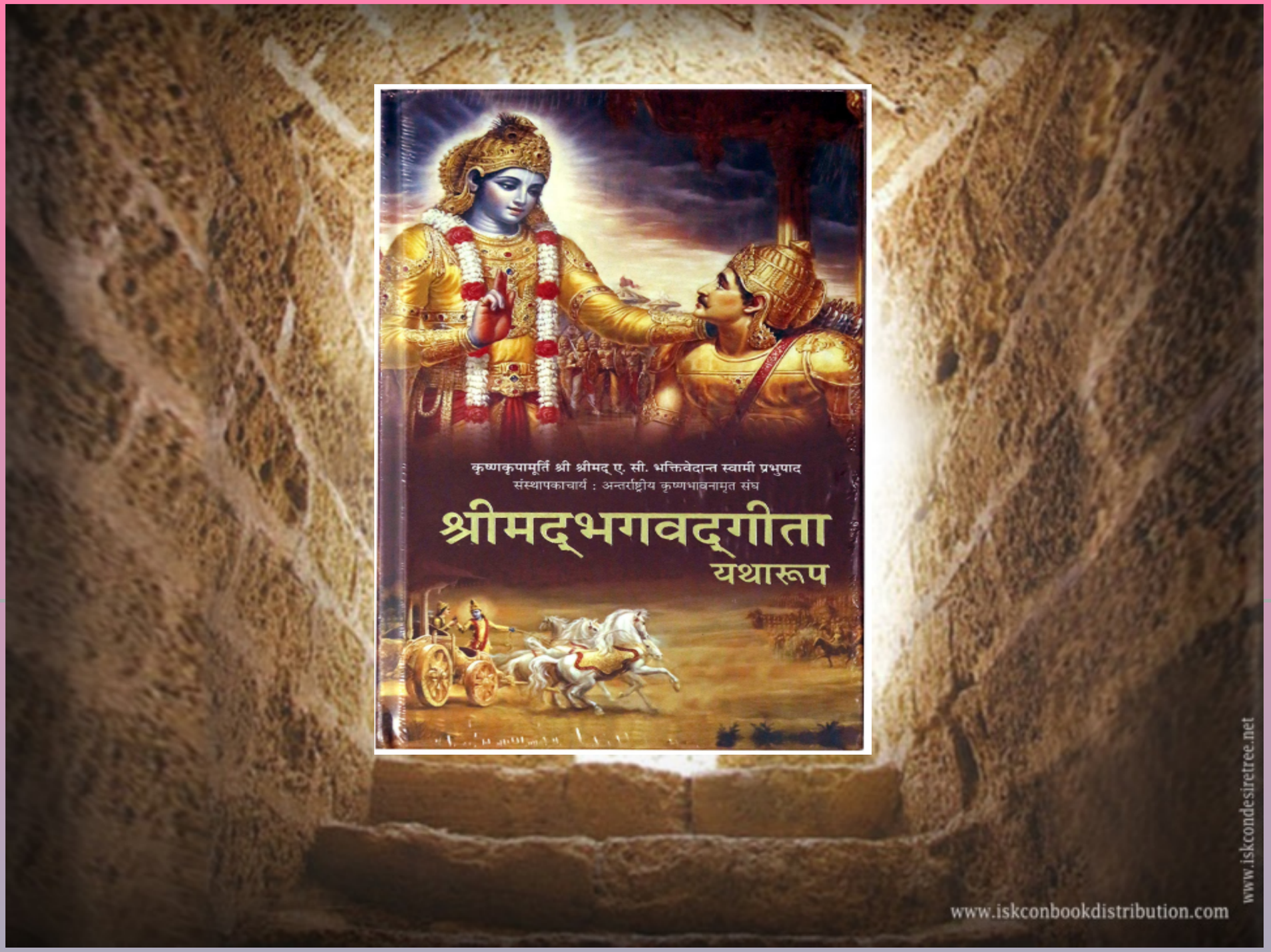

ISKCON
MANGALURU

भगवद गीता का इतिहास

4.1

श्री भगवानुवाच
इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्॥ १॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा – मैंने इस अमर योगविद्या का उपदेश सूर्यदेव विवस्वान् को दिया और विवस्वान् ने मनुष्यों के पिता मनु को उपदेश दिया और मनु ने इसका उपदेश इक्ष्वाकु को दिया।

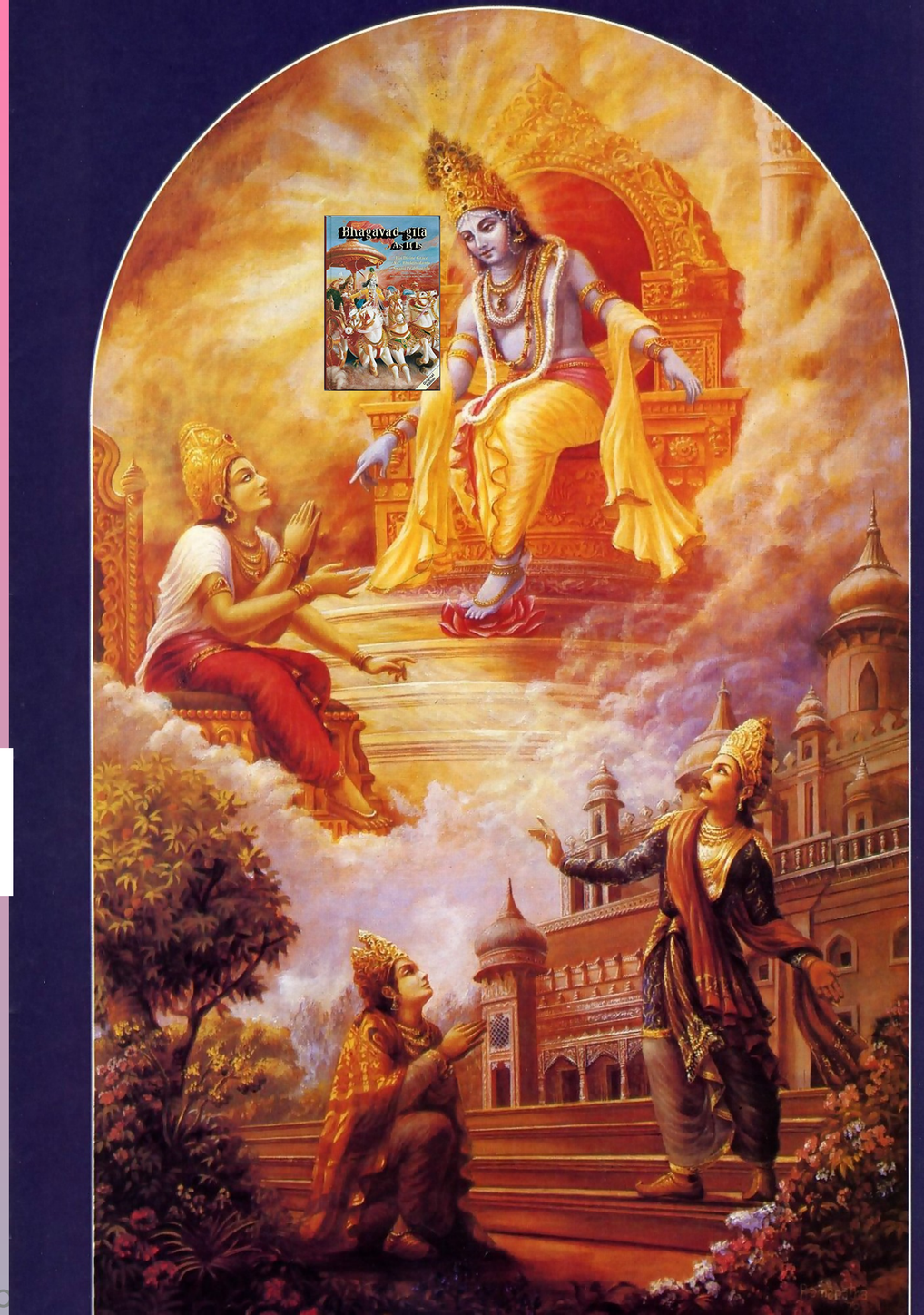

ISKCON MANGALURU

भगवद गीता का इतिहास

4.2

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः |
स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप || २ ||

इस प्रकार यह परम विज्ञान गुरु-परम्परा द्वारा प्राप्त किया गया और राजर्षियों ने इसी विधि से इसे समझा | किन्तु कालक्रम में यह परम्परा छिन्न हो गई, अतः यह विज्ञान यथारूप में लुप्त हो गया लगता है |

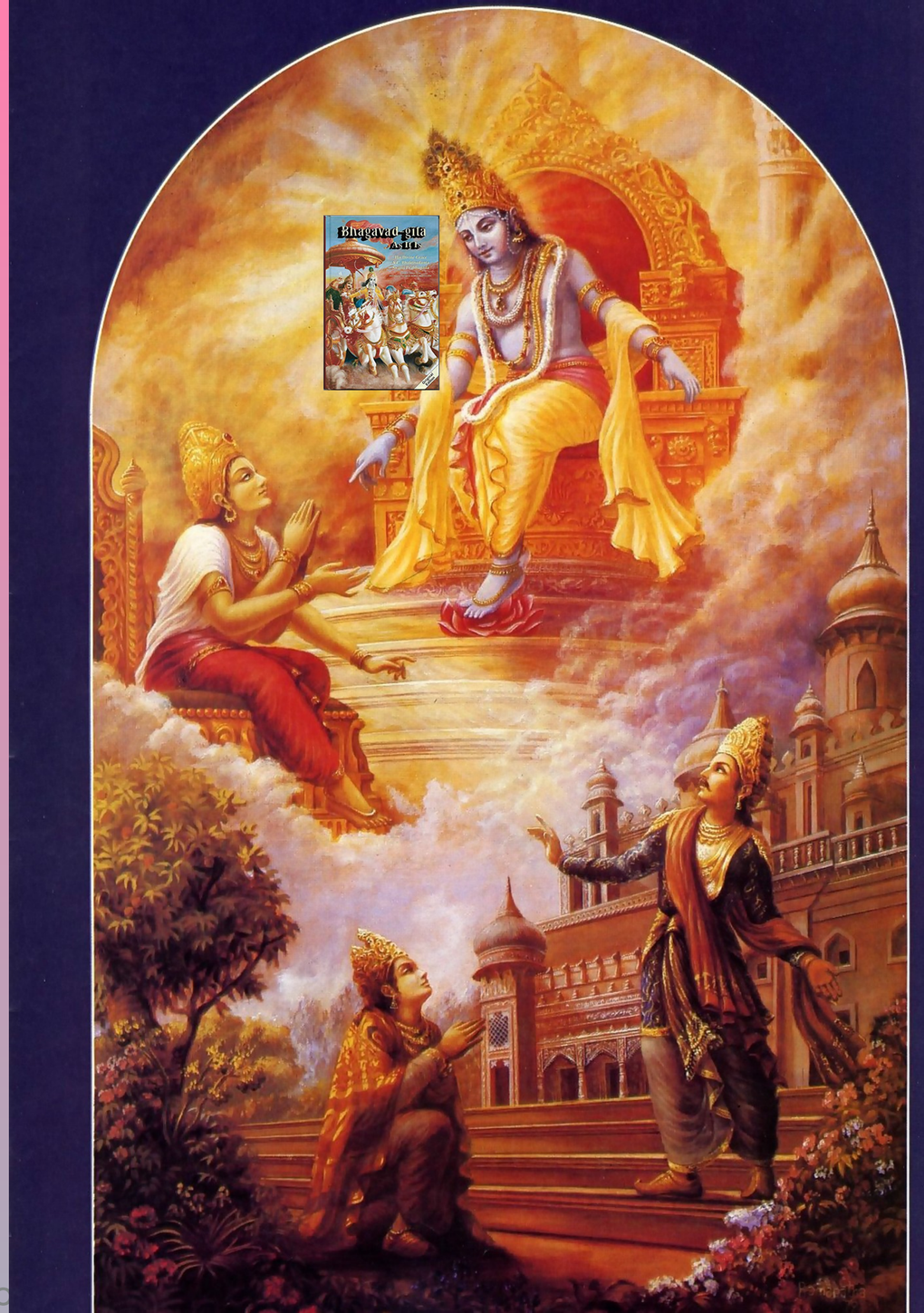

ISKCON MANGALURU

Hare Krishna Movement

belongs to

Brahma-Madhva-Gauḍīya-sampradāya

Srimad Bhagavad-Gita (BG 4.2) recommends:

Evaṁ paramparā-prāptam imaṁ rājarṣayo viduḥ

This supreme science (bhagavad-gita) should be received through the chain of disciplic succession

1. Kṛṣṇa

2. Brahmā

3. Nārada

4. Vyāsa

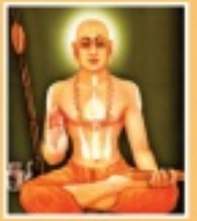

5. Madhva

6. Padmanābha

7. Nṛhari

8. Mādhava

9. Akṣobhya

10. Jaya Tīrtha

11. Jñānasindhu

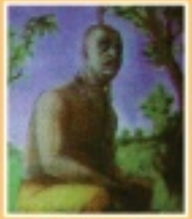

12. Dayānidhi

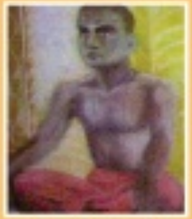

13. Vidyānidhi

14. Rājendra

15. Jayadharma

16. Puruṣottama

17. Brahmanya Tīrtha

18. Vyāsa Tīrtha

19. Lakṣmīpati

20. Mādhavendra Purī

21. Īśvara Purī, (Nityānanda, Advaita)

22. Lord Caitanya

23. Rūpa, (Svarūpa, Sanātana)

24. Raghunātha, Jīva

25. Kṛṣṇadāsa

26. Narottama

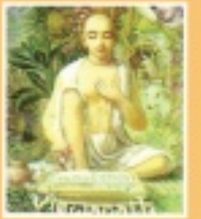

27. Viśvanātha

28. Baladev, Jagganatha

29. Bhaktivinoda

30. Gaurakiśora

31. Bhaktisiddhānta Sarasvati

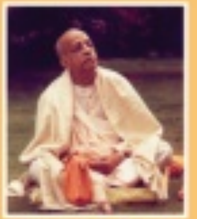

32. Bhaktivedanta Swami Prabhupāda

ISKCON MANGALURU

www.iskconmangaluru.com

पर कैसे ?

आप मेरे समकालीन हैं!

ISKCON
MANGALURU

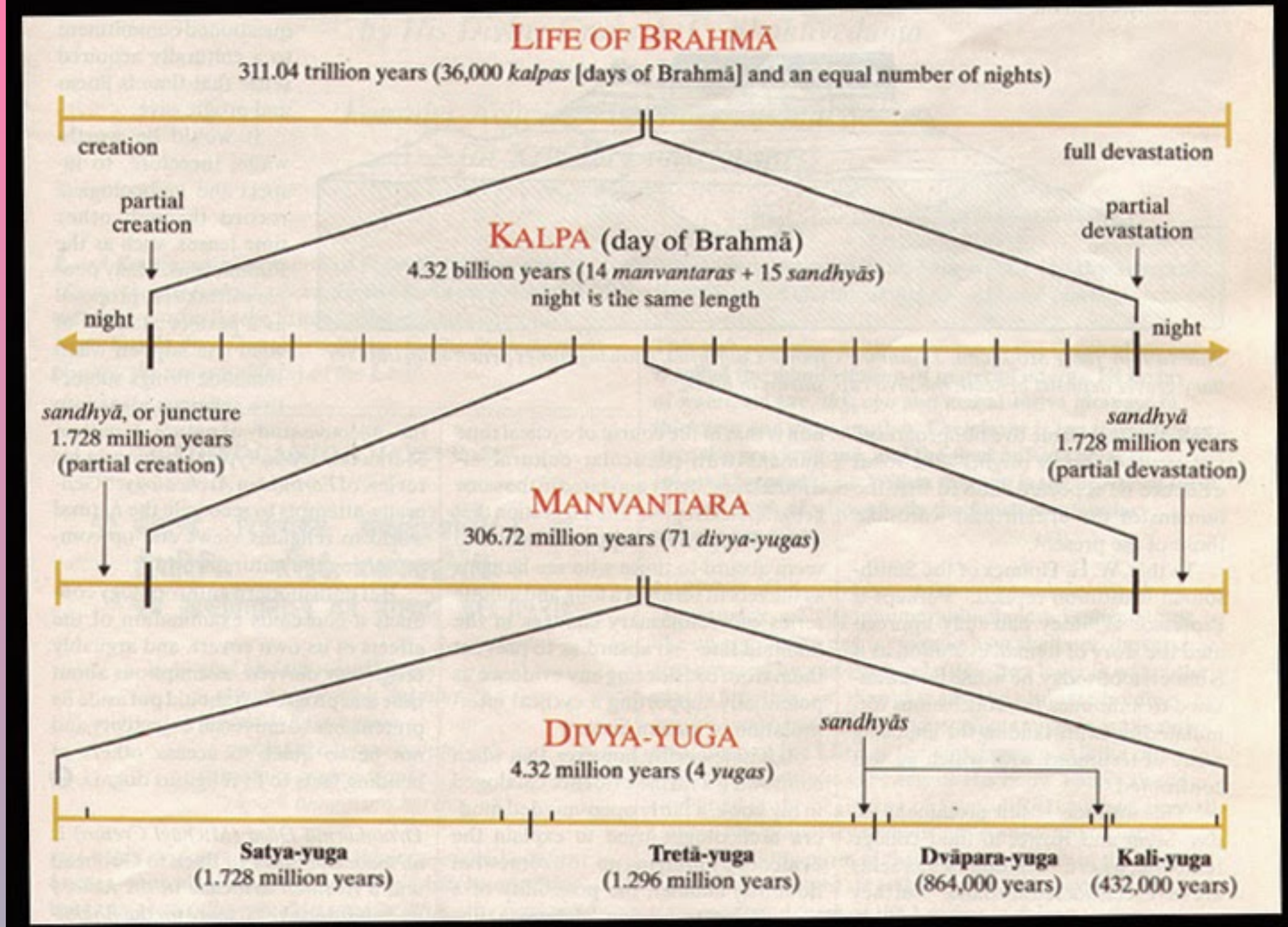

ISKCON
MANGALURU

ब्रह्मा का जीवन

ब्रह्मा को 50 साल हो गए	= 432000*10*1000*2*360*50	155.52 trillion years
6 मनवंतरस खत्म हो गए	= 6*432000*10*1000/14	1851.4285 million yrs
4 युगों के 27 चक्र	= 27*432000*10	116.6400 million yrs
सत्य, त्रेता और द्वापर	= 9*432000	3.888 million years
कलियुग में समय बीत गया	= 5117 years	5117 years
ब्रह्म का जीवन	= 155.52+ .001971962	155.522 trillion years

मनु का जीवन

4 युगों के 27 चक्र	= 27*432000*10	116.6400 million yrs
सत्य, त्रेता और द्वापर	= 9*432000	3.888 million years
कलियुग में समय बीत गया	= 5117 years	5117 years
मनु का जीवन	=116.64 + 3.888 + .005117	120.5331 million yrs

यह स्वीकार करते हुए कि मनु के जन्म से पहले, गीता को भगवान ने उनके शिष्य, सूर्य-देवता विवस्वानो से बात की थी।

गीता को 1200 लाख साल पहले विवस्वान को दिया गया था

ISKCON MANGALURU

गीता धरती पर आई

"त्रेता-युग की शुरुआत में भगवान ने इस विज्ञान को विवस्वानु को - विवस्वानु ने मनु तक पहुंचाया । मनु, मानव जाति के पिता होने के नाते, इसे अपने पुत्र महाराज इक्ष्वाकु को दिया, जो इस पृथ्वी ग्रह के राजा थे और रघु वंश के पूर्वज थे जिसमें भगवान रामचंद्र प्रकट हुए थे। इसलिए, भगवद गीता मानव समाज में इक्ष्वाकु के समय से अस्तित्व में है। "

Treta and Dwapara	= 5*432000	2160000
Time elapsed in kali yuga	= 5117 years	5117 years

गीता पृथ्वी पर आई: 20 लाख साल पहले

ISKCON MANGALURU

ब्रह्मा का एक दिन	8,640,000,000 years
ब्रह्मा का एक घंटा	360,000,000 years
ब्रह्मा का एक मिनट	6,000,000 years
ब्रह्मा का एक सेकंड	100,000 years

ISKCON MANGALURU

कृष्ण का अवतरण कैसे होता है?

4.6

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥

यद्यपि मैं अजन्मा तथा अविनाशी हूँ और यद्यपि मैं समस्त जीवों का स्वामी हूँ, तो भी प्रत्येक युग में मैं अपने आदि दिव्य रूप में प्रकट होता हूँ।

तात्पर्य: भगवान् सामान्य जीव की भाँति शरीर-परिवर्तन नहीं करते। इस जन्म में बद्धजीव का एक प्रकार का शरीर हो सकता है, किन्तु अगले जन्म में दूसरा शरीर रहता है। भौतिक जगत् में जीव का कोई स्थायी शरीर नहीं है, अपितु वह एक शरीर से दुसरे में देहान्तरण करता रहता है। किन्तु भगवान् ऐसा नहीं करते। जब भी वे प्रकट होते हैं तो अपनी अन्तरंगा शक्ति से वे अपने उसी आद्य शरीर में प्रकट होते हैं। दूसरे शब्दों में, श्रीकृष्ण इस जगत् में अपने आदि शाश्वत स्वरूप में दो भुजाओं में बाँसुरी धारण किये अवतरित होते हैं। यद्यपि वे अपने उसी दिव्य शरीर में प्रकट होते हैं और ब्रह्माण्ड के स्वामी होते हैं तो भी ऐसा लगता है कि वे सामान्य जीव की भाँति प्रकट हो रहे हैं। यद्यपि उनका शरीर भौतिक शरीर की भाँति क्षीण नहीं होता फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान् कृष्ण बालपन से कुमारावस्था तथा कुमारावस्था से तरुणावस्था प्राप्त करते हैं। किन्तु आश्चर्य तो यह है कि वे कभी युवावस्था से आगे नहीं बढ़ते।

ISKCON MANGALURU
www.iskconmangaluru.c

कृष्ण का अवतरण कब होता है?

4.7

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत |
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् || ७ ||

हे भरतवंशी! जब भी और जहाँ भी धर्म का पतन होता है और अधर्म की प्रधानता होने लगती है, तब तब मैं अवतार लेता हूँ|

ISKCON MANGALURU

www.iskconmangaluru.com

कृष्ण का अवतरण क्यों होता है?

4.8

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् |
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

भक्तों का उद्धार करने, दुष्टों का विनाश करने तथा धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए मैं हर युग में प्रकट होता हूँ|

भगवान् के ऐसे अनेक अनुचर हैं जो असुरों का संहार करने में सक्षम हैं| किन्तु भगवान् तो अपने उन निष्काम भक्तों को तुष्ट करने के लिए विशेष रूप से अवतार लेते हैं जो असुरों द्वारा निरन्तर तंग किये जाते हैं| असुर भक्त को तंग करता है, भले ही वह उसका सगा-सम्बन्धी क्यों न हो| यद्यपि प्रह्लाद् महाराज हिरण्यकशीपु के पुत्र थे, किन्तु तो भी वे अपने पिता द्वारा उत्पीड़ित थे| इसी प्रकार कृष्ण की माता देवकी यद्यपि कंस की बहन थीं, किन्तु उन्हें तथा उनके पति वासुदेव को इसीलिए दण्डित किया गया था क्योंकि उनसे कृष्ण को जन्म लेना था| अतः भगवान् कृष्ण मुख्यतः देवकी के उद्धार करने के लिए प्रकट हुए थे, कंस को मारने के लिए नहीं| किन्तु ये दोनों कार्य एकसाथ सम्पन्न हो गये| अतः यह कहा

ISKCON MANGALURU
www.iskconmangaluru.com

कृष्ण को जानने का क्या लाभ है?

4.9

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत: |
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन || ९ ||

हे अर्जुन! जो मेरे अविर्भाव तथा कर्मों की दिव्य प्रकृति को जानता है, वह इस शरीर को छोड़ने पर इस भौतिक संसार में पुन: जन्म नहीं लेता, अपितु मेरे सनातन धाम को प्राप्त होता है |

तात्पर्य: "श्री भगवान् को जान लेने से ही मनुष्य जन्म तथा मृत्यु से मुक्ति की पूर्ण अवस्था प्राप्त कर सकता है | इस सिद्धि को प्राप्त करने का कोई अन्य विकल्प नहीं है |"(श्वेताश्वतर उपनिषद् ३.८) इसका कोई विकल्प नहीं है का अर्थ यही है कि जो श्रीकृष्ण को श्री भगवान् के रूप में नहीं मानता वह अवश्य ही तमोगुणी है और मधुपात्र को केवल बाहर से चाटकर या भगवद्गीता की विद्वता पूर्ण संसारी विवेचना करके मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता | इसे शुष्क दार्शनिक भौतिक जगत् में महत्त्व पूर्ण भूमिका निभाने वाले हो सकते हैं, किन्तु वे मुक्ति के अधिकारी नहीं होते | ऐसे अभिमानी संसारी विद्वानों को भगवद् भक्त की अहैतुकी कृपा की प्रतीक्षा करनी पड़ती है | अत: मनुष्य को चाहिए कि श्रद्धा तथा ज्ञान के साथ कृष्ण भावना मृत का अनुशीलन करे और सिद्धि प्राप्त करने का यही उपाय है |

ISKCON MANGALURU
www.iskconmangaluru.c

कृष्ण और हमारे बीच अंतर

कृष्ण का स्वरूप आध्यात्मिक है

हमारा स्वरूप अस्थायी है

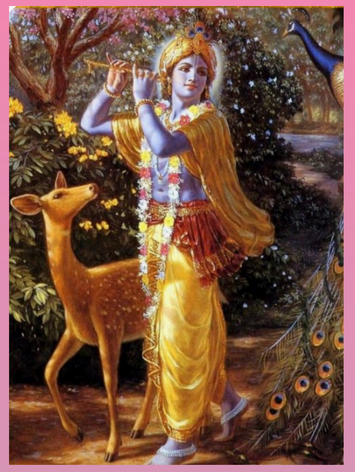

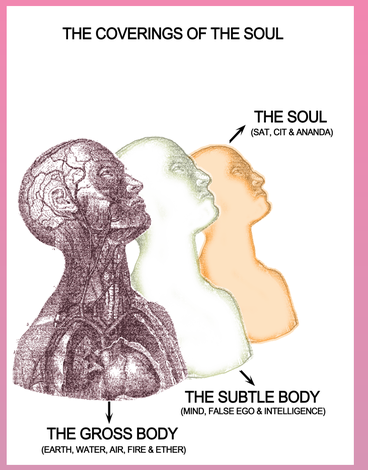

हम माया द्वारा नियंत्रित होते हैं,

कृष्ण हैं माया का नियंत्रक

ISKCON MANGALURU

4.11

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥

जिस भाव से सारे लोग मेरी शरण ग्रहण करते हैं, उसी के अनुरूप मैं उन्हें फल देता हूँ। हे पार्थ! प्रत्येक व्यक्ति सभी प्रकार से मेरे पथ का अनुगमन करता है।

तात्पर्य: कोई एक भक्त कृष्ण को परम स्वामी के रूप में चाह सकता है, दूसरा अपने सखा के रूप में, तीसरा अपने पुत्र के रूप में और चौथा अपने प्रेमी के रूप में। कृष्ण सभी भक्तों को समान रूप से उनके प्रेम की प्रगाढ़ता के अनुसार फल देते हैं।

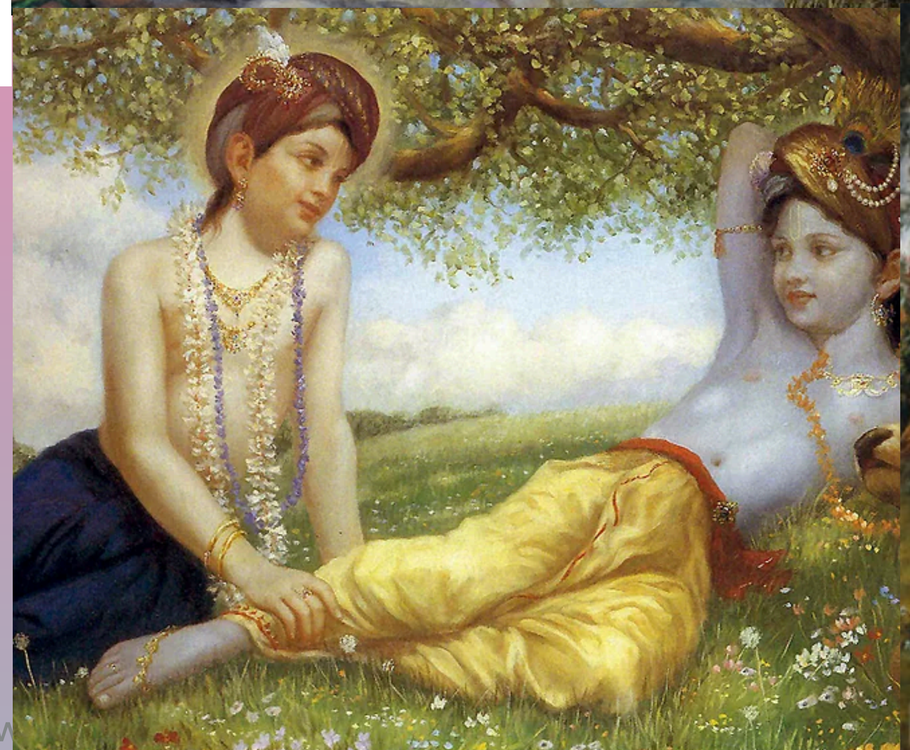

ISKCON
MANGALURU

4.12

इस संसार में मनुष्य सकाम कर्मों में सिद्धि चाहते हैं, फलस्वरूप वे देवताओं की पूजा करते हैं |
निस्सन्देह इस संसार में मनुष्यों को सकाम कर्म का फल शीघ्र प्राप्त होता है |

ISKCON MANGALURU

4.13

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः |
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् || १३ ||

प्रकृति के तीनों गुणों और उनसे सम्बद्ध कर्म के अनुसार मेरे द्वारा मानव समाज के चार विभाग रचे गये | यद्यपि मैं इस व्यवस्था का स्रष्टा हूँ, किन्तु तुम यह जाना लो कि मैं इतने पर भी अव्यय अकर्ता हूँ |

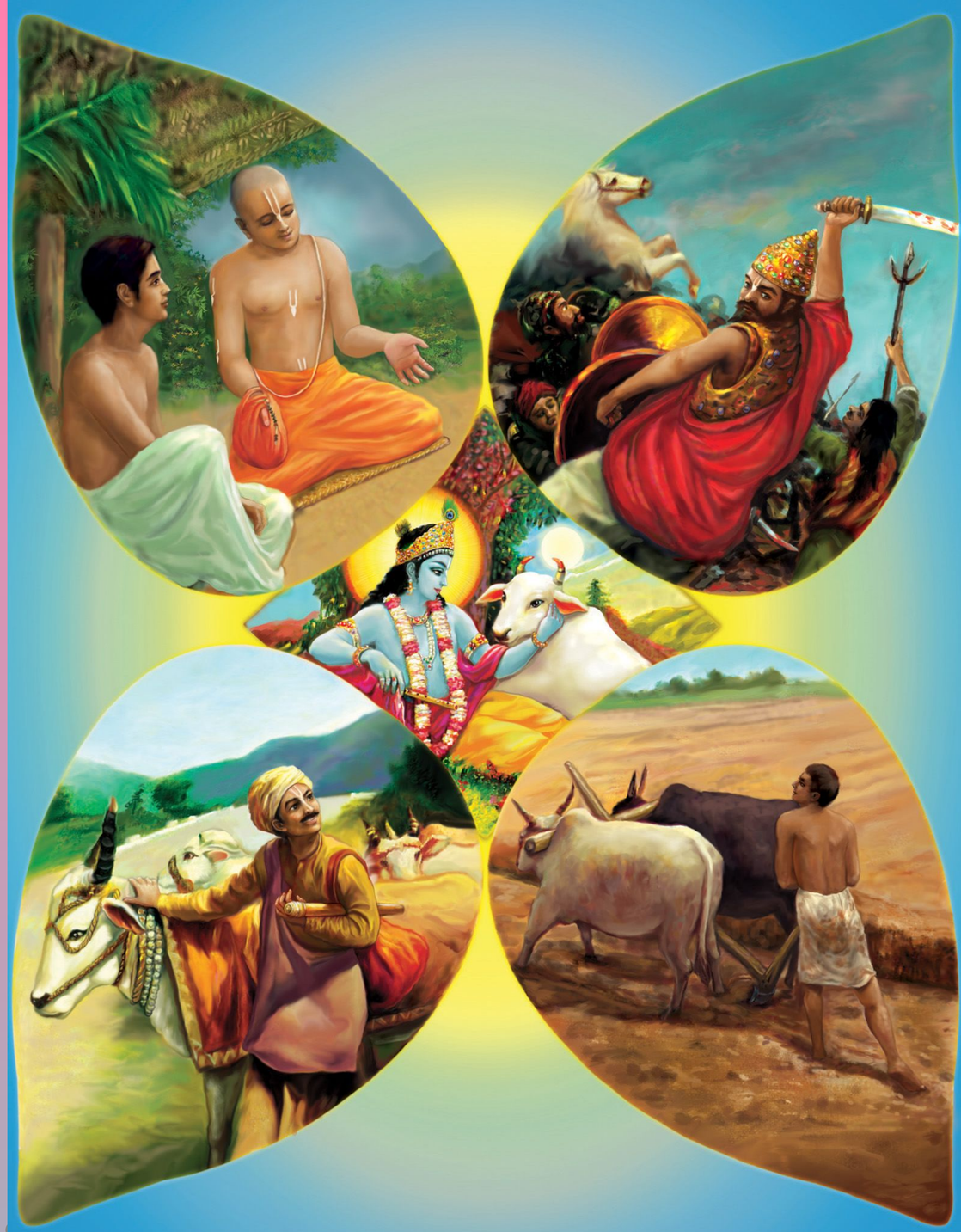

ISKCON MANGALURU

4.14

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा |
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते || १४ ||

मुझ पर किसी कर्म का प्रभाव नहीं पड़ता, न ही मैं कर्मफल की कामना करता हूँ | जो मेरे सम्बन्ध में इस सत्य को जानता है, वह कभी भी कर्मों के पाश में नहीं बँधता |

ISKCON MANGALURU

4.15

प्राचीन काल में समस्त मुक्तात्माओं ने मेरी दिव्य प्रकृति को जान करके ही कर्म किया, अतः तुम्हें चाहिए कि उनके पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करो |

तात्पर्य: मनुष्यों की दो श्रेणियाँ हैं | कुछ के मनों में दूषित विचार भरे रहते हैं और कुछ भौतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होते हैं | कृष्णभावनामृत इन दोनों श्रेणियों के व्यक्तियों के लिए समान रूप से लाभप्रद है | जिनके मनों में दूषित विचार भरे हैं उन्हें चाहिए कि भक्ति के अनुष्ठानों का पालन करते हुए क्रमिक शुद्धिकरण के लिए कृष्णभावनामृत को ग्रहण करें | और जिनके मन पहले ही ऐसी अशुद्धियों से स्वच्छ हो चुके हैं, वे उसी कृष्णभावनामृत में अग्रसर होते रहें, जिससे अन्य लोग उनके आदर्श कार्यों का अनुसरण कर सकें और लाभ उठा सकें |

ISKCON MANGALURU

4.17

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मण: |
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति: || १७ ||

कर्म की बारीकियों को समझना अत्यन्त कठिन है | अत: मनुष्य को चाहिए कि वह यह ठीक से जाने कि कर्म क्या है, विकर्म क्या है और अकर्म क्या है |

ISKCON MANGALURU

अकर्म

ISKCON MANGALURU

अपने कर्मफलों की सारी आसक्ति को त्याग कर सदैव संतुष्ट तथा स्वतन्त्र रहकर वह सभी प्रकार के कार्यों में व्यस्त रहकर भी कोई सकाम कर्म नहीं करता |

(Bhagavad-gītā 4.20)

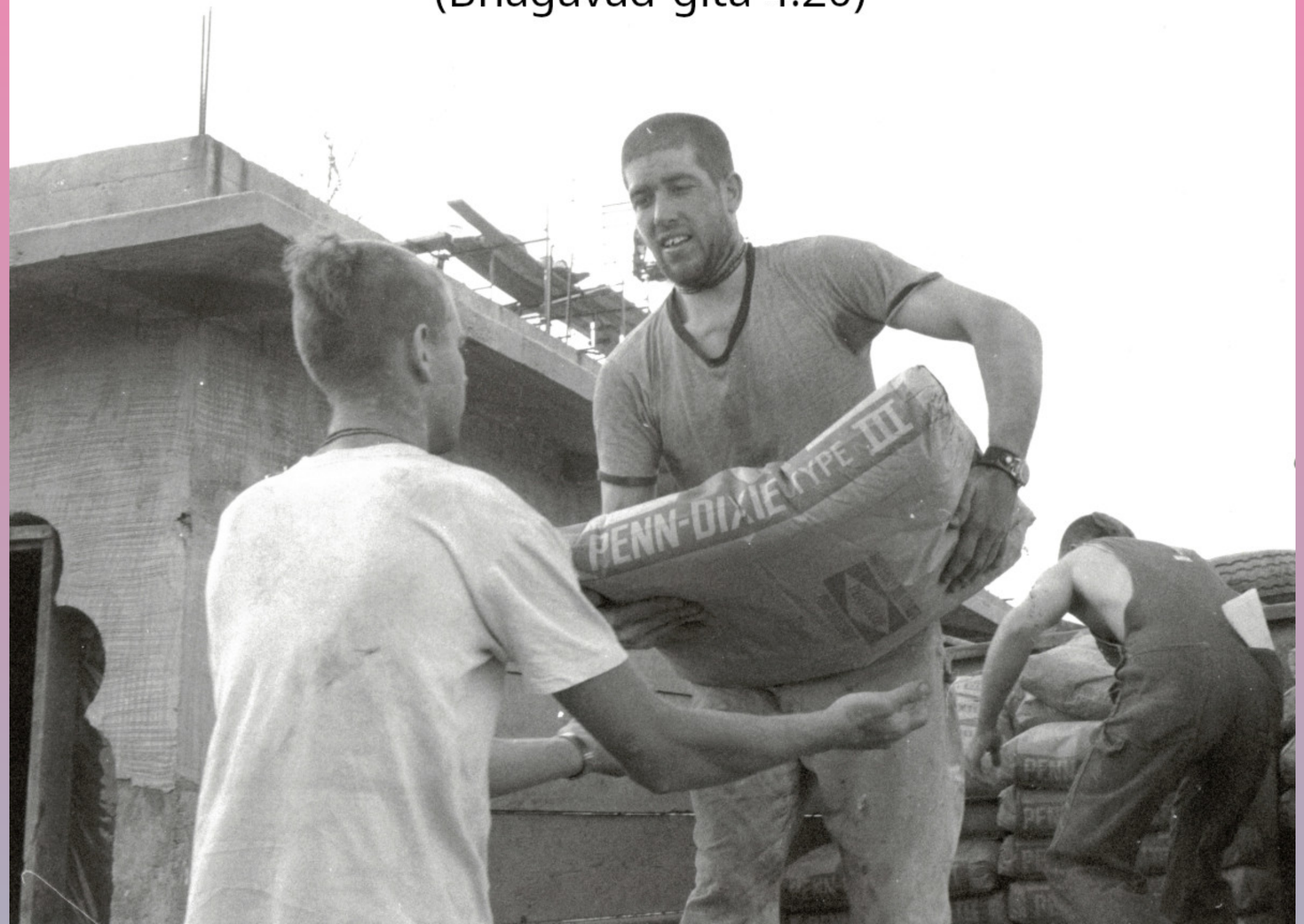

ISKCON
MANGALURU

जो व्यक्ति कृष्णभावनामृत में पूर्णतया लीन रहता है, उसे अपने आध्यात्मिक कर्मों के योगदान के कारण अवश्य ही भगवद्धाम की प्राप्ति होती है, क्योंकि उसमें हवन आध्यात्मिक होता है और हवि भी आध्यात्मिक होती है। ॥ २४ ॥

ISKCON
MANGALURU

इनमें से कुछ (विशुद्ध ब्रह्मचारी) श्रवणादि क्रियाओं तथा इन्द्रियों को मन की नियन्त्रण रूपी अग्नि में स्वाहा कर देते हैं तो दूसरे लोग (नियमित गृहस्थ) इन्द्रियविषयों को इन्द्रियों की अग्नि में स्वाहा कर देते हैं ॥ २६ ॥

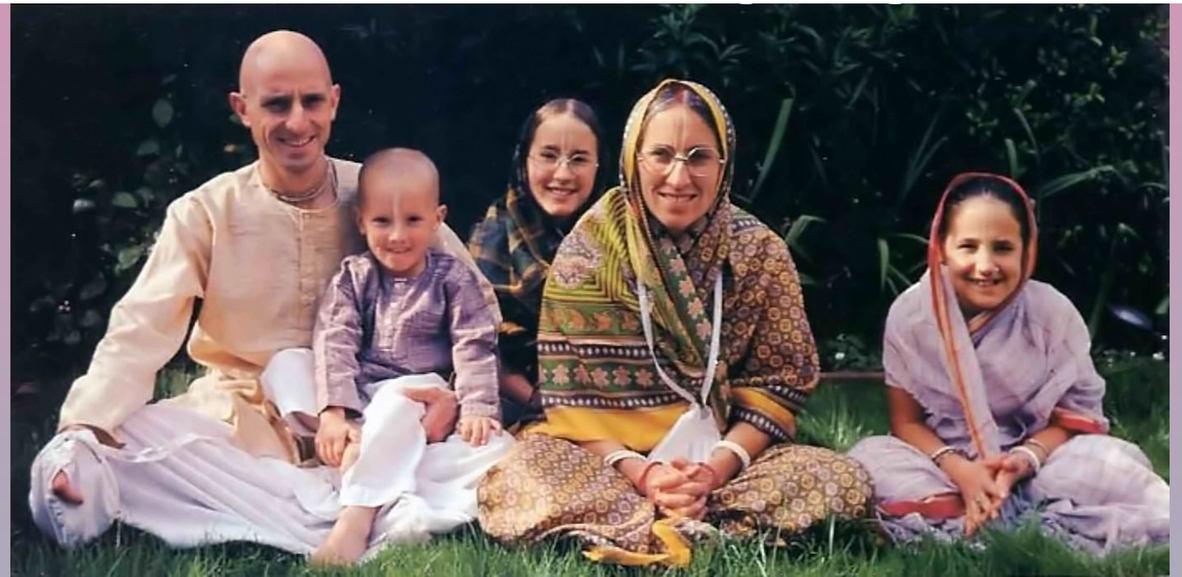

ISKCON
MANGALURU

कठोर व्रत अंगीकार करके कुछ लोग अपनी सम्पत्ति का त्याग करके, कुछ कठिन तपस्या द्वारा, कुछ अष्टांग योगपद्धति के अभ्यास द्वारा अथवा दिव्यज्ञान में उन्नति करने के लिए वेदों के अध्ययन द्वारा प्रबुद्ध बनते हैं |

तात्पर्य: मानव जीवन के चारों आश्रमों के सदस्य – ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यासी-पूर्णयोगी बनने के निमित्त हैं | मानव जीवन पशुओं की भाँति इन्द्रियतृप्ति के लिए नहीं बना है, अतएव मानव जीवन के चारों आश्रम इस प्रकार व्यवस्थित हैं कि मनुष्य आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सके | ब्रह्मचारी या शिष्यगण प्रामाणिक गुरु की देखरेख में इन्द्रियतृप्ति से दूर रहकर मन को वश में करते हैं | वे कृष्णभावनामृत से सम्बन्धित शब्दों को ही सुनते हैं | श्रवण ज्ञान का मूलाधार है, अतः शुद्ध ब्रह्मचारी सदैव हरेर्नामानुकीर्तनम् अर्थात् भगवान् के यश के कीर्तन तथा श्रवण में ही लगा रहता है |

Having accepted strict vows, some become enlightened by sacrificing their possessions, and others by performing severe austerities, by practicing the yoga of eightfold mysticism, or by studying the Vedas to advance in transcendental knowledge.

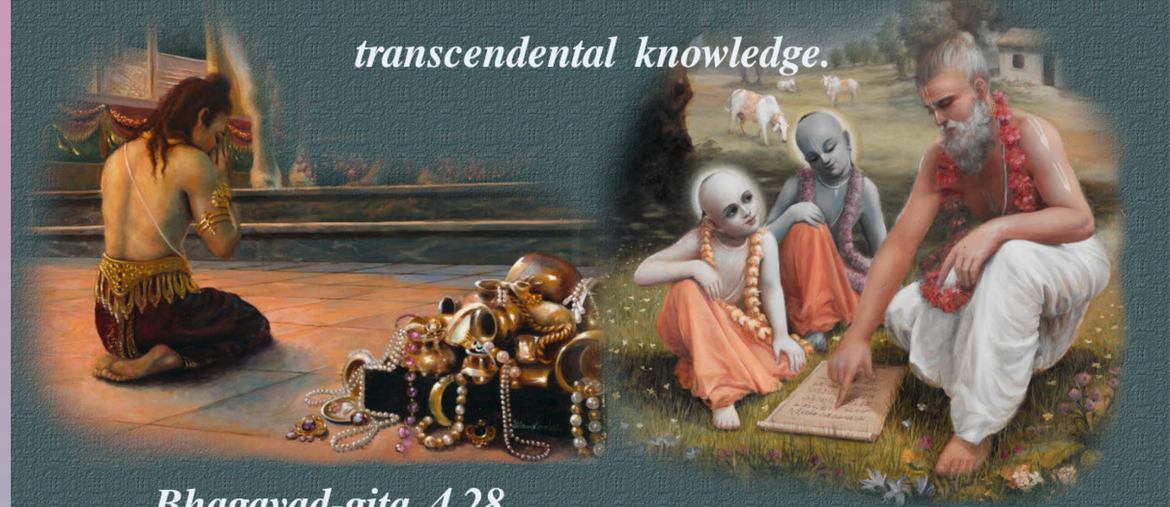

Bhagavad-gita 4.28

ISKCON MANGALURU
www.iskconmangalu

हे कुरुश्रेष्ठ! जब यज्ञ के बिना मनुष्य इस लोक में या इस जीवन में ही सुखपूर्वक नहीं रह सकता, तो फिर अगले जन्म में कैसे रह सकेगा?

॥ ३१ ॥

what then of the next? (Bhagavad-gītā 4.31)

ISKCON MANGALURU

हे परंतप! द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है |
हे पार्थ! अन्ततोगत्वा सारे कर्मयज्ञों का
अवसान दिव्य ज्ञान में होते है |4.33।

तात्पर्य: समस्त यज्ञों का यही एक प्रयोजन है कि जीव को पूर्णज्ञान प्राप्त हो जिससे वह भौतिक कष्टों से छुटकारा पाकर अन्त में परमेश्वर की दिव्य सेवा कर सके | तो भी इन सारे यज्ञों की विविध क्रियाओं में रहस्य भरा है और मनुष्य को यह रहस्य जान लेना चाहिए | कभी-कभी कर्ता की श्रद्धा के अनुसार यज्ञ विभिन्न रूप धारण कर लेते है | जब यज्ञकर्ता की श्रद्धा दिव्यज्ञान के स्तर तक पहुँच जाती है तो उसे ज्ञानरहित द्रव्ययज्ञ करने वाले से श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि ज्ञान के बिना यज्ञ भौतिक स्तर पर रह जाते हैं और इनसे कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं हो पाता | यथार्थ ज्ञान का अंत कृष्णभावनामृत में होता है जो दिव्यज्ञान की सर्वोच्च अवस्था है | ज्ञान की उन्नति के बिना यज्ञ मात्र भौतिक कर्म बना रहता है | किन्तु जब उसे दिव्यज्ञान के स्तर तक पहुँचा दिया जाता है तो ऐसे सारे कर्म आध्यात्मिक स्तर प्राप्त कर लेते हैं | चेतनाभेद के अनुसार ऐसे यज्ञकर्म कभी-कभी कर्मकाण्ड कहलाते हैं और कभी ज्ञानकाण्ड | यज्ञ वही श्रेष्ठ है, जिसका अन्त ज्ञान में हो |

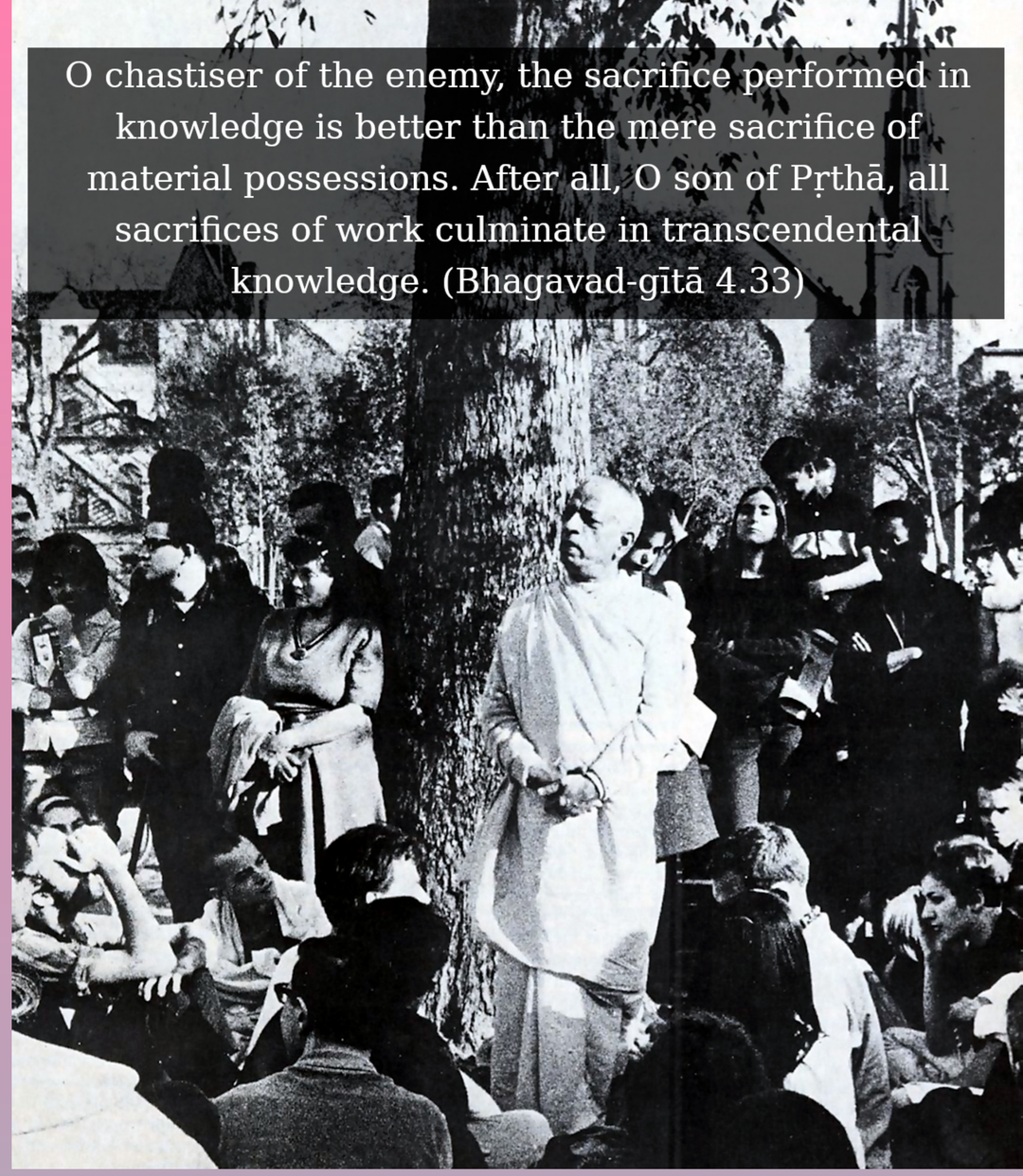

ISKCON MANGALURU

4.34

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया |
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः || ३४ ||

तुम गुरु के पास जाकर सत्य को जानने का प्रयास करो |
उनसे विनीत होकर जिज्ञासा करो और उनकी सेवा करो |
स्वरुपसिद्ध व्यक्ति तुम्हें ज्ञान प्रदान कर सकते हैं,
क्योंकि उन्होंने सत्य का दर्शन किया है |

ISKCON MANGALURU

यदि तुम्हें समस्त पापियों में भी सर्वाधिक पापी समझा जाये तो भी तुम दिव्यज्ञान रूपी नाव में स्थित होकर दुख-सागर को पार करने में समर्थ होगे।

ISKCON MANGALURU

जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, उसी तरह हे अर्जुन! ज्ञान रूपी अग्नि भौतिक कर्मों के समस्त फलों को जला डालती है।

तात्पर्य: आत्मा तथा परमात्मा सम्बन्धी पूर्णज्ञान तथा उनके सम्बन्ध की तुलना यहाँ अग्नि से की गई है। यह अग्नि न केवल समस्त पापकर्मों के फलों को जला देती है, अपितु पुण्यकर्मों के फलों को भी भस्मसात् करने वाली है।

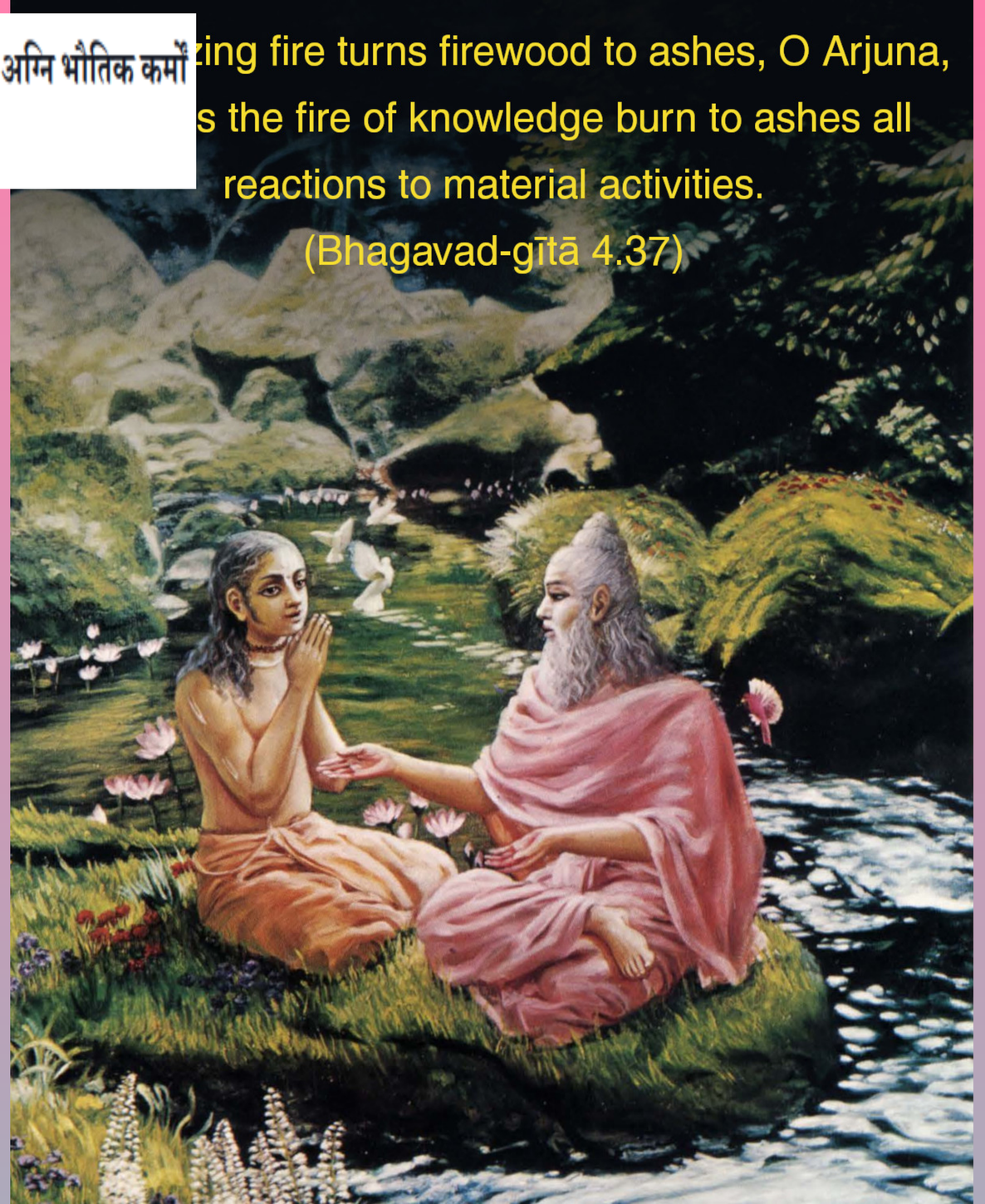

ISKCON
MANGALURU

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः |
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति || ३९ ||

जो श्रद्धालु दिव्यज्ञान में समर्पित है और जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया है, वह इस ज्ञान को प्राप्त करने का अधिकारी है और इसे प्राप्त करते ही वह तुरन्त आध्यात्मिक शान्ति को प्राप्त होता है |

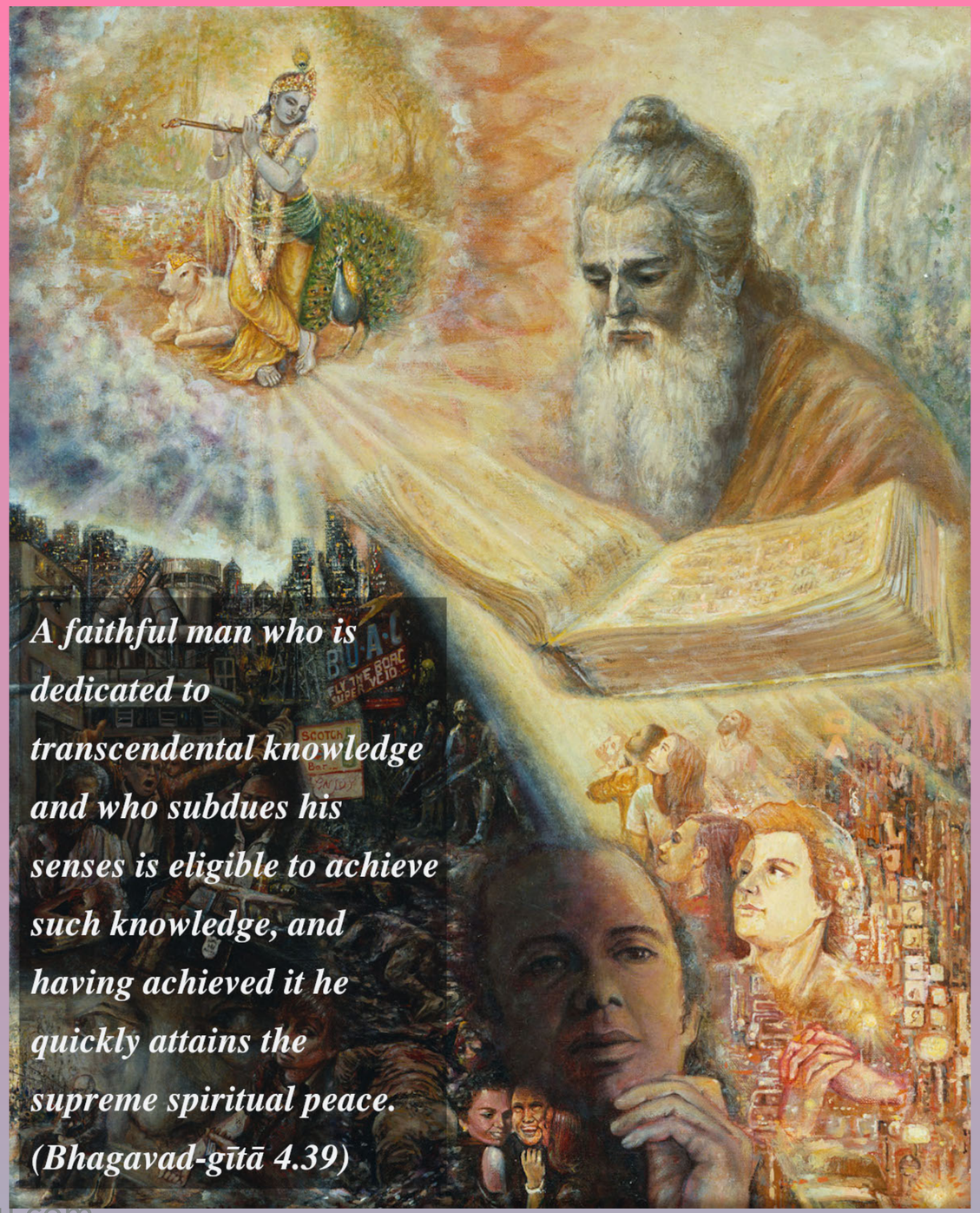

ISKCON MANGALURU

www.iskconmangaluru.com

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् |
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय || ४१ ||

जो व्यक्ति अपने कर्मफलों का परित्याग करते हुए भक्ति करता है और जिसके संशय दिव्यज्ञान द्वारा विनष्ट हो चुके होते हैं वही वास्तव में आत्मपरायण है | हे धनञ्जय! वह कर्मों के बन्धन से नहीं बँधता |

तात्पर्य: जो मनुष्य भगवद्गीता की शिक्षा का उसी रूप में पालन करता है जिस रूप में भगवान् श्रीकृष्ण ने दी थी, वो वह दिव्यज्ञान की कृपा से समस्त संशयों से मुक्त हो जाता है | पूर्णत: कृष्णभावनाभावित होने के कारण उसे श्रीभगवान् के अंश रूप में अपने स्वरूप का ज्ञान पहले ही हो जाता है | अतएव निस्सन्देह वह कर्मबन्धन से मुक्त है |

ISKCON MANGALURU

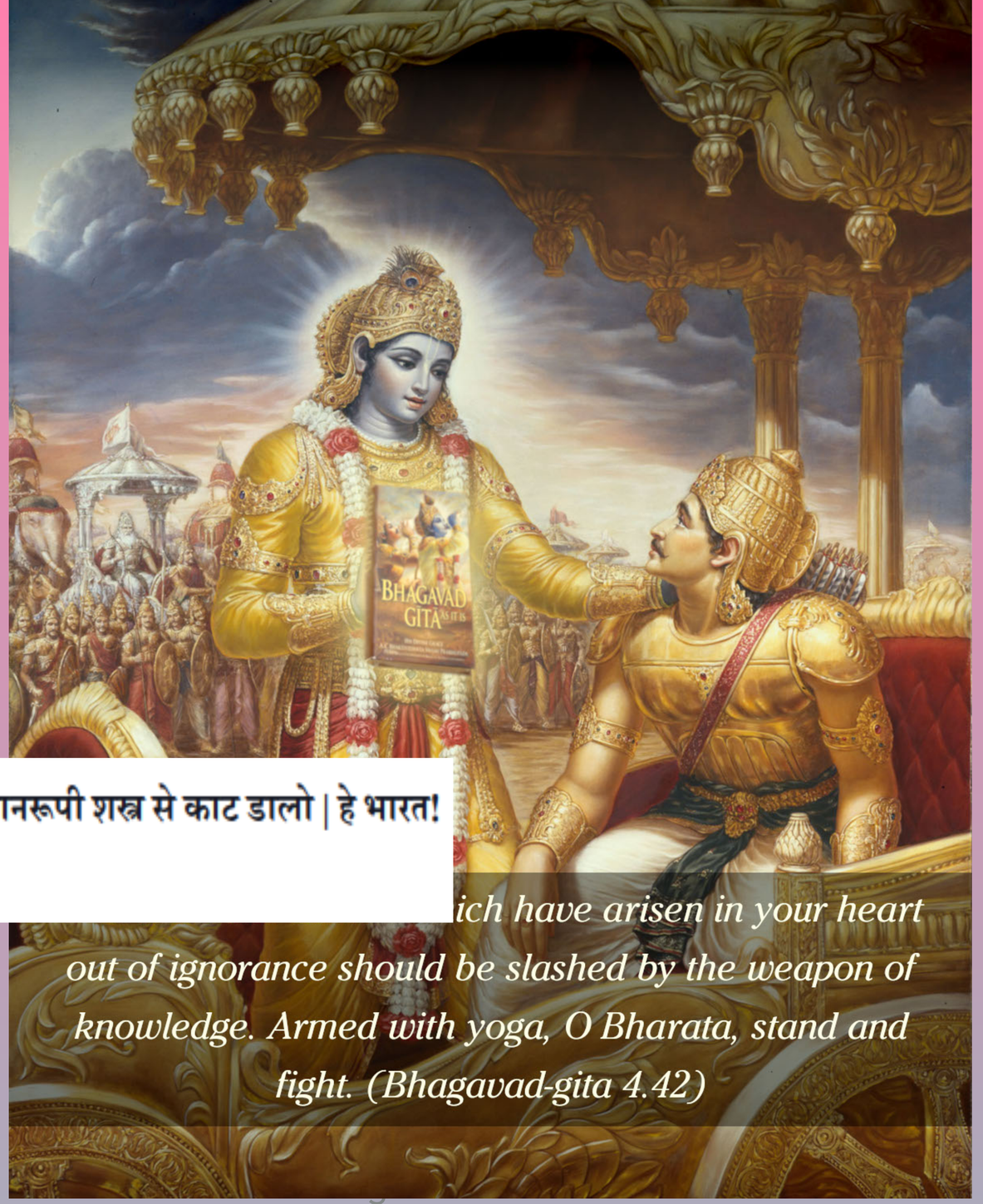

अतएव तुम्हारे हृदय में अज्ञान के कारण जो संशय उठे हैं उन्हें ज्ञानरूपी शस्त्र से काट डालो | हे भारत!
तुम योग से समन्वित होकर खड़े होओ और युद्ध करो |

ich have arisen in your heart out of ignorance should be slashed by the weapon of knowledge. Armed with yoga, O Bharata, stand and fight. (Bhagavad-gita 4.42)

ISKCON
MANGALURU

स्वामी प्रभुपाद के कुछ शब्द

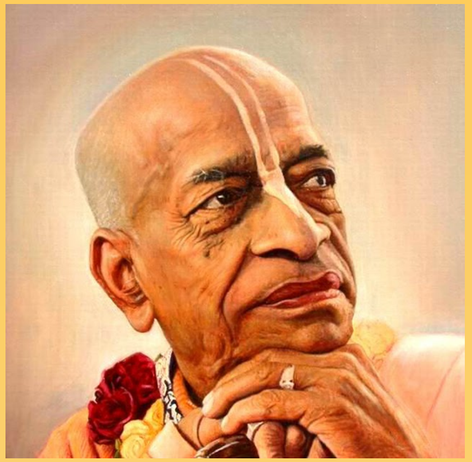

इस अध्याय में जिस योगपद्धति का उपदेश हुआ है वह सनातन योग कहलाता है | इस योग में दो तरह के यज्ञकर्म किये जाते है – एक तो द्रव्य का यज्ञ और दूसरा आत्मज्ञान यज्ञ जो विशुद्ध आध्यात्मिक कर्म है | यदि आत्म-साक्षात्कार के लिए द्रव्ययज्ञ नहीं किया जाता तो ऐसा यज्ञ भौतिक बन जाता है | किन्तु जब कोई आध्यात्मिक उद्देश्य या भक्ति से ऐसा यज्ञ करता है तो वह पूर्णयज्ञ होता है | आध्यात्मिक क्रियाएँ भी दो प्रकार की होती हैं – आत्मबोध (या अपने स्वरूप को समझना) तथा श्रीभगवान् विषयक सत्य | जो भगवद्गीता के मार्ग का पालन करता है वह ज्ञान की इन दोनों श्रेणियों को समझ सकता है | उसके लिए भगवान् के अंश स्वरूप आत्मज्ञान को प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती है | ऐसा ज्ञान लाभप्रद है क्योंकि ऐसा व्यक्ति भगवान् के दिव्य कार्यकलापों को समझ सकता है | इस अध्याय के प्रारम्भ में स्वयं भगवान् ने अपने दिव्य कार्यकलापों का वर्णन किया है | जो व्यक्ति गीता के उपदेशों को नहीं समझता वह श्रद्धाविहीन है और जो भगवान् द्वारा उपदेश देने पर भी भगवान् के सच्चिदानन्द स्वरूप को नहीं समझ पाता तो यह समझना चाहिए कि वह निपट मुर्ख है | कृष्णभावनामृत के सिद्धान्तों को स्वीकार करके अज्ञान को क्रमशः दूर किया जा सकता है |

ISKCON MANGALURU